नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नर्मदा रहे निर्मल और अविरल...

मध्य प्रदेश की जीवनरेखा कही जाने वाली मां नर्मदा के संरक्षण के लिए राज्य सरकार ने 'निर्मल एवं अविरल मां नर्मदा मिशन' यानी 'नमन मिशन' को मंजूरी देकर एक महत्वपूर्ण पहल की है. नदी संरक्षण को केवल धार्मिक आस्था या सरकारी परियोजना के दायरे से बाहर निकालकर पर्यावरणीय सरोकार के रूप में देखने की जरूरत लंबे समय से महसूस की जा रही थी. इस दृष्टि से नमन मिशन का उद्देश्य और इसकी कार्ययोजना उम्मीद जगाती है.

नर्मदा केवल एक नदी नहीं है. यह मध्य प्रदेश की कृषि, पेयजल, जैव विविधता, अर्थव्यवस्था और संस्कृति से गहराई से जुड़ी है. इसके किनारे बसे गांवों और शहरों की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस नदी पर निर्भर है. ऐसे में नर्मदा के जल का प्रदूषित होना केवल पर्यावरण का संकट नहीं, बल्कि मानव जीवन और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य का संकट भी है. नमन मिशन के तहत नदी में मिलने वाले गंदे पानी और कचरे को रोकने, प्राकृतिक प्रवाह को बनाए रखने तथा तटों का वैज्ञानिक विकास करने पर जोर दिया गया है. यह तीनों लक्ष्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं. केवल घाटों को सुंदर बना देने से नदी स्वच्छ नहीं होगी और केवल सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगा देने से उसका प्राकृतिक प्रवाह सुनिश्चित नहीं होगा. नदी को एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र मानकर समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा. इस मिशन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और जीआईएस जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल प्रस्तावित है. यह स्वागतयोग्य कदम है.

तकनीक के माध्यम से जल की गुणवत्ता, प्रदूषण के स्रोत, तटीय क्षेत्रों में बदलाव और नदी के स्वास्थ्य की लगातार निगरानी की जा सकती है. लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी, जब उसके आधार पर समयबद्ध कार्रवाई भी सुनिश्चित हो. निगरानी के आंकड़े केवल सरकारी फाइलों में दर्ज होकर न रह जाएं, बल्कि उनका सार्वजनिक उपयोग और जवाबदेही भी तय हो. मिशन के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 100 करोड़ रुपए तथा कैम्पा निधि से 100 करोड़ रुपए जुटाने का प्रावधान किया गया है. 200 करोड़ रुपए सालाना का यह निवेश नर्मदा के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है.

हालांकि असली चुनौती धन खर्च करने से अधिक उसके सही उपयोग की है. सीवेज प्रबंधन, औद्योगिक प्रदूषण पर नियंत्रण, नदी के कैचमेंट क्षेत्र का संरक्षण, तटों पर हरित पट्टी और अवैध गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश जैसे कामों को प्राथमिकता देनी होगी. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नर्मदा संरक्षण को केवल सरकार का अभियान न बनाया जाए. स्थानीय निकायों, ग्राम पंचायतों, किसानों, उद्योगों, धार्मिक संस्थाओं और आम नागरिकों की भागीदारी इसके लिए अनिवार्य है. नदी में कचरा न डालना, पूजा सामग्री के लिए उचित व्यवस्था करना और जलस्रोतों के आसपास हरियाली बचाना नागरिक जिम्मेदारी भी है. नर्मदा को बचाना वास्तव में मध्य प्रदेश के पर्यावरण और भविष्य को बचाना है.

'नमन मिशन' की सफलता का पैमाना सुंदर घाट या खर्च की गई राशि नहीं, बल्कि वह दिन होगा जब नर्मदा का पानी निर्मल हो, प्रवाह अविरल हो और उसके दोनों तट जैव विविधता से समृद्ध हों. नदी को मां कहने की हमारी परंपरा तभी सार्थक होगी, जब उसके प्रति हमारी जिम्मेदारी भी उतनी ही निर्मल और अविरल हो.

ग्वालियर चंबल डायरी

ताजपोशी के जश्न के दरम्यान कठिन चुनौतियों की आहट

हरीश दुबे

यूं तो सत्तापक्ष से लेकर भाजपा के केंद्रीय संगठन तक में ग्वालियर चंबल अंचल की सदैव से ठीक ठाक नुमाइंदगी रही है लेकिन नए राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की नवघोषित टीम में भी इस अंचल के महत्व को बरकरार रखा गया है. प्रदेश से जिन अनुभवी कद्दावर नेताओं को नवीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी में जगह मिली है, उनमें ग्वालियर अंचल के भी दो नेता लालसिंह आर्य और आशीष अग्रवाल शुमार हैं. यदि सांसद वीडी शर्मा का नाम भी इस फेहरिस्त में जोड़ दिया जाए तो यह संख्या तीन तक पहुंच जाती है.

लालसिंह भिंड, आशीष ग्वालियर और वीडी शर्मा मुरैना से वास्ता रखते हैं. यह बात अलग है कि वीडी ने चुनाव लड़ने के लिए चंबल छोड़कर बुंदेलखंड का रुख किया. लालसिंह शिवराज सरकार में कई बार मिनिस्टर रहे हैं जबकि आशीष शिवराज के दौर से ही प्रदेश में पार्टी के मीडिया प्रबंधन की जिम्मेदारी निभाते रहे हैं. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी में ग्वालियर चंबल से चेहरे चयनित करते वक्त अनुभव, युवा ऊर्जा, जनता से सीधे जुड़ाव और चुनावी रणनीतिक कौशल का ध्यान रखा गया है. वीडी दो बार से सांसद हैं तो लालसिंह को पार्टी गोहद से चुनाव लड़ाती रही है जबकि आशीष अग्रवाल के बारे में यह किसी से छिपा नहीं है कि वे 28 के चुनाव के मद्देनजर यहां अपना जनाधार मज़बूत करने में जुटे हैं और ग्वालियर पूर्व सीट से टिकट के दावेदार माने जाते हैं. फिलवक्त भाजपा के समक्ष ग्वालियर चंबल में असल चुनौती अगले साल के मध्य में होने वाले निकाय चुनाव हैं.

निकाय चुनाव के करीब सवा साल बाद विधानसभा के और इसके छह महीने बाद आमचुनाव होने हैं. तात्पर्य यह कि एक के बाद एक चुनावी चुनौतियां सर पर हैं. हालांकि राष्ट्रीय कार्यकारिणी के नुमाइंदों के कार्यक्षेत्र का दायरा विस्तृत होता है लेकिन संगठन के ओहदेदार भले ही दिल्ली में बैठे हों, उन्हें अपने गृहक्षेत्र में परफॉर्मेंस दुरूस्त रखना ही पड़ता है और जब ओहदेदार खुद पार्लियामेंट और असेंबली के फेर में हों तो संगठन की अपेक्षाएं और बढ़ जाती हैं. जाहिर है कि वीडी, लालसिंह से लेकर आशीष तक को चुनाव से लेकर जनता से जुड़ाव तक हर कसौटी पर खुद को खरा साबित करना होगा.

'देखि दिनन के फेर...'

पीतांबरा नगरी दतिया से आई एक खबर ने सियासी हलकों को चौंका दिया है, वह यह कि दतिया में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा लगाए जाने वाले बैनरों, होर्डिंग और पोस्टरों से नरोत्तम मिश्रा गायब हो गए हैं. उनकी जगह आशुतोष तिवारी के फोटो साया हो रहे हैं. नरोत्तम के एकाधिकारिक वर्चस्व वाली दतिया जिला भाजपा की कार्यकारिणी को चुनाव नतीजा आने के बाद पहले ही जिलाध्यक्ष समेत छुट्टी दी जा चुकी है.

नए जिलाध्यक्ष के नाम पर मंथन चल रहा है, आशुतोष तिवारी का नाम प्रबलता से उभरा तो नरोत्तम के शुभचिंतकों ने अपने नेता का नाम भी संभावितों की फेहरिस्त में जोड़ दिया है जो कभी खुद जिलाध्यक्ष तय करते थे. याद आती हैं बशीर बद्र की ये लाइनें... 'दिखला के यही मंज़र बादल चला जाता है, पानी से मकानों पे कैसे लिखा जाता है.'

राजपरिवार का संपत्ति विवाद : अभी और इंतजार

करीब आठ दशक पहले तक जिस दरबार में स्टेट भर के हर तरह के मामलात निपटाए जाते थे . आज वही दरबार अपने परिवार के निजी विवाद के आपसी राजीनामे से निपटारे के लिए ग्वालियर की एक अदालत की शरण में है. हम जिकर कर रहे हैं आजादी से पहले करीब ढाईसौ बरस तक मौजूदा मप्र के एक बड़े हिस्से पर राज करने वाले सिंधिया परिवार के संपत्ति विवाद का. यूं तो सारा मामला राजीनामे या समझौते के जरिए निबटता नजर आ रहा था लेकिन रियासत की दिवंगत राजकुमारी पद्मावती राजे की बेटी द्वारा कोर्ट में दाखिल एक आवेदन ने मामले को कुछ आगे खींच दिया है. हालांकि राजपरिवार के बाकी सदस्यों ने इस आवेदन का जवाब दाखिल कर दिया है लेकिन मामले में दिवंगत राजकुमारी की बेटी की एंट्री के बाद आखिरी फैसले के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है.

प्राकृतिक खेती

सतत् कृषि और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

> मध्य पूर्व में चल रहे मौजूदा संकट से पैदा हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए, हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों से सात सूत्रीय अपील की है, जिनमें रासायनिक खाद का समझदारी से इस्तेमाल और प्राकृतिक खेती को अपनाना शामिल हैं। एक ओर जहाँ प्राकृतिक खेती को अपनाने से खेती में स्थायित्व आ रहा है, वहीं दूसरी ओर इससे पशुधन के आर्थिक मूल्य को बढ़ाने में भी मदद मिल रही है, जिनका आम तौर पर दूध देने की उम्र खत्म होने के बाद परित्याग कर दिया जाता है। इसका एक और फ़ायदा यह है कि घरेलु उपभोग और निर्यात के लिए सुरक्षित भोजन मिलता है, साथ ही देश की कीमती विदेशी मुद्रा की भी बचत होती है।

डॉ. देवेश चतुर्वेदी

भारत ने पिछले दशक में कृषि क्षेत्र में तेज प्रगति की है. आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के अनुसार, पिछले 5 सालों में विकास दर 4त्न से अधिक रही है. खाद्यान्न, बागवानी और तेलहन फसलों का बंपर उत्पादन हुआ है. यह किसानों द्वारा नई तकनीकों को अपनाने और सिंचाई वाले क्षेत्र का विस्तार, बेहतर जल उपयोग दक्षताऔर समय पर व पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्धता जैसी सरकार की ठोस नीतियों के समर्थन का परिणाम है. बागवानी फसलों की हिस्सेदारी भी काफ़ी बढ़ रही है और इसकी विकास दर अपेक्षाकृत अधिक है।

हालांकि, रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग को लेकर भी चिंताएं बढ़ रही हैं, जिसके कारण मिट्टी की उर्वरता में गिरावट और प्रमुख फसलों की उत्पादकता में स्थिरता आ रही है. कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, नाइट्रोजन उपयोग दक्षता (एनयूई) में धीरे-धीरे आई कमी के कारण एक ऐसा दुष्चक्र बन गया है, जिसमें किसान रासायनिक खादों की मात्रा तो लगातार बढ़ा रहे हैं, लेकिन उत्पादकता में बहुत मामूली बढ़ोतरी ही हो रही है।

सरकार की मृदा स्वाथ्य और उर्वरक योजना के तहत 26 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्डों का वितरण किया गया है. इससे प्राप्त डेटा के अखिल-इंडिया विश्लेषण से चिंताजनक बात सामने आई है कि मिट्टी में जैविक कार्बन (एसओसी) और अन्य जरूरी सूक्ष्म-पोषक तत्वों की भारी कमी है. स्वस्थ मिट्टी में एसओसी 1त्न से अधिक होना चाहिए, लेकिन यह औसतन 0.5त्न के आसपास है और कुछ क्षेत्रों में यह 0.3त्न तक के यह खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है।

कम मात्रा में एसओसी से मिट्टी की संरंध्रता कम हो जाती है, जिसका दोहरा नकारात्मक प्रभाव प?ता है- पानी का जमीन में रिसाव और जल धारण क्षमता, दोनों में कमी आती है. परिणामस्वरूप, वर्षा और सिंचाई का पानी बह जाता है, जो ऊपरी मिट्टी को बहा ले जाता है और न तो यह जमीन के नीचे जाकर भूजलस्तर बढ़ा पाता है और न ही पौधों की वृद्धि के लिए आसानी से उपलब्ध रहता है।

कम एसओसी का एक और नकारात्मक प्रभाव यह है कि ऐसे मिट्टी पर उगाए जाने वाले पौधों की पोषक तत्व अवशोषण क्षमता कम हो जाती है. समान उत्पादकता स्तर तक पहुँचने के लिए अधिक से अधिक उर्वरकों की आवश्यकता होती है. रासायनिक उर्वरकों की बढ़ी हुई खुराक उर्वरक उपयोग दक्षता को और कम कर देती है, जिससे मृदा-स्वास्थ्य का नुकसान होता है और देश रासायनिक उर्वरकों या उनके घरेलू उत्पादन के कच्चे माल को आयात करने में अपनी कीमती विदेशी मुद्रा खर्च करता है. अत्यधिक रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों के असंतुलित उपयोग ने उन लाभकारी सूक्ष्मजीवों और कीड़ों को भी कम कर दिया है, जो मिट्टी की संरंध्रता को बेहतर बनाने और गहरी मिट्टी से पोषक तत्वों को ऊपरी मिट्टी तक स्थानांतरित करने में मदद करते हैं, ताकि पौधे उन्हें अवशोषित कर सकें।

एक अन्य चिंताजनक प्रभाव उपज की गुणवत्ता और सुरक्षा पर पड़ता है. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि रसायन खाने-पीने और पशु चारे की श्रृंखला में पहुँच जायेंगे और आखिरकार मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करेंगे. ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनमें फलों, सब्जियों, अनाज और अन्य वाणिज्यिक फसलों में कीटनाशकों का न्यूनतम अवशेष स्तर तय सीमा को पार कर गया है, जिसके चलते निर्यात की खेपें रद्द होती हैं और वैश्विक बाजार में ब्रांड इंडिया की छवि पर बुरा पड़ता है।

एक तरफ जहां इस मिशन के तहत प्रमाणन, विपणन और ब्रांडिंग के साथ शुद्ध प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ एक हाइब्रिड मॉडल को प्रोत्साहन देने की रणनीति में यह दिखाया गया है कि प्राकृतिक खेती की प्रथाओं को अपनाने और रासायनिक उर्वरकों की खुराक को कम करने से भी लंबे समय तक उत्पादकता बनी रह सकती है और मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है.

इस मॉडल को व्यापक स्वीकार्यता मिल सकती है. इसे अपनाने वाले किसानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हाइब्रिड मॉडल में प्राकृतिक खेती की प्रथाओं को अपनाने से रासायनिक उर्वरकों पर धीरे-धीरे निर्भरता कम होती है.

यहाँ तक कि कुछ समय बाद, किसान कई फसलों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल पूरी तरह बंद कर सकते हैं और फिर भी उतनी ही पैदावार और आमदनी बनाए रख सकते हैं.

(लेखक भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के पूर्व सचिव हैं)

राज्य में 1.80 करोड़ मतदाताओं के नाम कटे

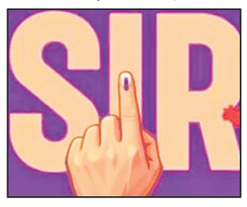

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की समयसीमा समाप्त होने पर अब महाराष्ट्र के 9 करोड़ 80 लाख नाम में से लगभग 1 करोड़ 80 लाख नाम मतदाता सूची से हटाए जाएंगे. इस तरह 20 प्रतिशत नाम हटेंगे. इनमें मुंबई के 30 लाख तथा नागपुर जिले के 14,26,106 नाम शामिल हैं. बताया जा रहा है कि जिन लोगों के नाम हटाए गए उनमें दिवंगत तथा 2 स्थानों पर दर्ज नाम वाले मतदाताओं का समावेश है. उल्लेखनीय है कि चुनाव आयोग के अधिकारी, कर्मचारी, बूथस्तरीय (बीएलओ) का काम करने वाले शिक्षक आदि ने 3 महीने तक चुनौतीपूर्ण स्थितियों में यह काम किया. एप की त्रुटि, नेटवर्क की समस्या से उन्हें जूझना पड़ा. राज्य की मतदाता सूची से 34 लाख मृतकों, 76 लाख लापता लोगों तथा 77 लाख स्थानांतरित लोगों के नाम हटाए गए. एसआईआर प्रक्रिया के दौरान राज्य में कई जगह बारिश भी काफी हुई. मूल मतदाता सूची में गलतियां कम नहीं थीं. एक ही पते पर ढेर सारे मतदाताओं के नाम डाल दिए गए थे. किसी मतदाता का नाम कहीं दूर के मतदान केंद्र में चला गया था. मृतकों व बाहर जा चुके लोगों के नाम कायम थे जिनके नाम पर फर्जी मतदान कराया जाता था. जिन मतदाताओं के नाम सूची में शामिल नहीं है उन्हें अपना नाम शामिल कराने के लिए अपील करनी पड़ेगी. बंगाल में ऐसे ही 27 लाख वोटर्स के नाम चुनाव के पूर्व हटाए गए थे. उन्हें अपील का अवसर नहीं मिल पाया और सुप्रीम कोर्ट ने सलाह दी कि अगली बार मतदान करना. मतदाता सूची को अचूक, पारदर्शक व अपटुडेट रखना चुनाव आयोग का कर्तव्य है. यदि अपात्र व्यक्ति के नाम हटाने पर इतना ध्यान दिया जाता है तो यह भी देखना चाहिए कि पात्र मतदाता भी अपने वोटिंग के अधिकार से वंचित न रहे. मतदाता सूची पुनरीक्षण में शिक्षकों को लगाया गया. इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई का नुकसान हुआ क्योंकि राज्य में ऐसी भी शालाएं हैं जहां बहुत कम शिक्षक हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जो हमारे साथ वह कुशल, बाकी सभी दिमागी नक्सल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अब तक मंदबुद्धि लोगों को दिमागी तौर पर पपैदल बताया जाता था, लेकिन मालूम पड़ा कि देश में दिमागी नक्सल भी हैं. प्रधानमंत्री मोदी ने इनकी पहचान की है. उन्होंने अपने से असहमत विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि जंगलों में हथियारी नक्सल को खत्म करने में सफलता मिली है, लेकिन अब दिमागी नक्सल से सावधान रहना होगा और उनकी पहचान कर उन्हें अलग-थलग करना होगा. पीएम के इस कथन पर आपकी क्या राय है?'

हमने कहा, 'किसी के दिमाग में क्या चल रहा है, इसे मनोवैज्ञानिक या साइकिएट्रिस्ट भली-भांति समझ सकते हैं. इसके लिए नार्को टेस्ट भी लिया जाता है. न्यूरोलॉजिस्ट या ब्रेन की सर्जरी करने वाला डॉक्टर भी ब्रेन स्कैन से इसका पता लगा सकता है. मोदी की तारीफ कीजिए कि उन्होंने बगैर सीटी स्कैन किए अपनी पारखी निगाह से दिमागी नक्सल को तुरंत पहचान लिया. जो भी व्यक्ति बीजेपी और एनडीए का विरोधी है और सरकार की नीतियों व कदमों की

आलोचना करता है, वह पक्का दिमागी नक्सली है. जिसके मस्तिष्क में हिंदुत्व की आस्था का प्रवाह, संघ की शाखा का अनुशासन, संस्कार व प्रतिबद्धता न हो और स्वतंत्र तरीके से सोचता हो, उसके दिमागी सर्किट में कहीं न कहीं भारी लोचा या गड़बड़ है. जो व्यक्ति नेहरू, इंदिरा की यादों में खोया रहता है अथवा मार्क्स व लेनिन के बारे में थोड़ी भी जानकारी रखता है और सेक्यूलर तरीके से सोचता है. वह जो गरीबों और बेरोजगार युवाओं के सवाल उठाता है, पेपर लीक का विरोध करता है. उसके ब्रेन की कंडीशनिंग सही तरीके से नहीं हुई है. ऐसे लोगों की नस्ल को दिमागी नक्सल ही कहना होगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, कुछ कहो तो तुरंत उसका परिणाम भी सामने आता है. सीजेआई ने युवा वकीलों को कॉकरोच कहा था, तो कॉकरोच जनता पार्टी बन गई. अब मोदी ने टिप्पणी की तो तत्काल दिमागी नक्सल पार्टी भी बन गई, जिसके लाखों फॉलोअर्स बन गए. कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम व 'आप' नेता अरविंद केजरीवाल ने भी खुद को बुद्धिजीवी नक्सल घोषित कर दिया. अब आप हमारे बारे में कहेंगे कि बोलूंगा तो बोलोगे कि बोलता है. ऐसी पार्टी तब बनती है, जब लोगों का दिमाग खौलता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12354
- डॉ. सागर खादीवाला

कुबेर हैं 23. धागा लपेटी हुई फिरकी 24. बहुत अच्छी तरह से किया गया काम

ऊपर से नीचे

1. समस्त, सारा, कुल, संसार (सं.) 2. लज्जाजनक 3. सूर्य 4. गर्जन, बिजली की कड़क, बिजली 5. शरीर, देह 7. दूकान, बाजार 9. प्रबल, अभिलाषा 12. जिसके सब कार्य पूर्ण हो चुके हों, तृप्त, संतुष्ट 13. पक्षपात 14. एक उपकरण जिससे कोई द्रव्य पदार्थ धार या फुहार के रूप में छोड़ा जाता है 17. स्वाद 20. सुर्ख, रक्त के रंग का 22. नष्ट होने वाला

बाएं से दाएं

1. पचास की संख्या 4. शरीर, देह 6. श्रेष्ठ पुरुष, धनी, रुपये के लेन-देन का व्यापार करने वाला 8. सुंदर स्त्री, जीभ10. ऊंचा और मोटा खंबा, बहुत-सी वस्तुओं का समूह जो एक साथ बेचा जाए 11. वह पथरीला मैदान जहां पेड़ आदि न हो 12. प्रतिदिन, सदा, नित्य 14. कोयल, कोकिल (सं.) 15. पराजय, माला 16. दंड, कारागार में बंद करने का दंड 18. सूत या कपड़ों पर लगाई जाने वाली पांडी 19. कोयले के रंग का, स्याह 21. एक देवयोनि जिसके राजा

Solution 12353

म	यू	र		इ	ह	लो	क
ज		सा	र	ना	थ		बू
मा	इं	ना		य		बा	ल
	ग		म	त	ग	ण	ना
स	द	मा			री		
मा		त	मा	श	बी	न	
धा	रा		या	म		मा	ल
न		भा	वी		ग	ज	ब

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्र के प्रति उदासीनता रहेगी. मन व्यथित रहेगा. दौड़धूप अत्याधिक होने से मानसिक तनाव रहेगा. राजनैतिक क्षेत्र में विवाद की स्थिति आने का योग है. वर्ष के मध्य में आत्म विश्वास जागेगा. साहसिक कार्यों में सफ्लता मिलेगी. अधिकारियों से मेल मिलाप होगा. वर्ष के अन्त में अचानक धन लाभ का योग है. व्यापार के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को साहसिक कार्यों में आत्म विष्वास में सफ्लता का योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का मन व्यथित रहेगा. मित्रों के प्रति उदासीनता रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यस्तता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में परिश्रम अधिक करना होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को प्रवास में सावधानी वांछनीय. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक विवाद की संभावना है. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को व्यापारिक क्षेत्र में धन लाभ के योग पाये जाते हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, होशियार होगा. सर्विस की ओर अधिक झुकाव रहेगा. कार्यकुशल तथा परिश्रमी होगा. मित्रों की संख्या सीमित रहेगी. जन्म स्थान से दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा.

मेष- युवाओं को कैरियर में आ रही परेशानियों से छुटकारा मिलेगा. वाकपटुता पर नियंत्रण रखें. मित्रता उपयोगी रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा.

वृषभ- अपनी ताकत का इस्तेमाल विरोधियोंको रोकने में करना पड़ेगा. वाहनादि का सुख प्राप्त होगा. भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी. मित्रवर्ग आपकी मदद करेंगे.

मिथुन- व्यर्थ के झगड़े में आपका समय बर्बाद हो सकता है. मांगलिक खर्च संभव है. अतिथि वृषभमन होगा. हर्ष बना रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक सिद्ध होगी.

कर्क- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी. कार्य विस्तार की संभावना है. आत्म विश्वास एवं मनोबल बना रहेगा. इच्छितकार्यों की पूर्ति होगी.

सिंह- दूसरों की आलोचना से घबराकर कार्य योजना बीच में ही छोड़ सकते हैं. सोचे हुये कार्यों में सफ्लता के योग है. मित्रों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा.

कन्या- आप बेहतर तरीके से काम निपटाने का प्रयास करेंगे. सहयोगी आपका विरोध कर सकते है. व्यापार व्यवसाय में लाभ सामान्य ही रहेगा.

तुला- थोडी परेशानी के बादजूद आपकी सफ्लता सुनिश्चित है, सामाजिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा.

वृश्चिक- मन में चल रही उलझन आपको फैसला लेने में रोकेगी. राजकीय कार्योंमें सफ्लता मिलेगी. लाभदायक योजना की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा.

धनु- बुजुर्गों के स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता रहेगी, जोखिम केकार्यों से दूर रहें. आवेश में लिया गया निर्णय नुकसानदायक रहेगा. व्यापारिक समस्याओं का समाधान होगा.

मकर- कड़ी मेहनत से शानदार परिणाम मिलेंगे, अनावश्यक टकराव छोड़कर काम पर ध्यान दें. किसी दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा.

कुम्भ- रूकी हुई योजना फिर से शुरू करने का मन बनेगा. पारिवारिक सुख तथा सौहार्द बना रहेगा. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा.

मीन- नए कारोबार में निवेश की संभावना बनेगी. पारिवारिक मामले उलझने से चिन्ता होगी. अपव्यय पर नियंत्रण रखें. संपत्ति वाहनादि का सुख प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

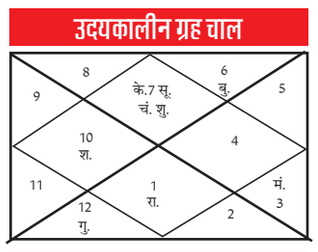

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल अष्टमीं गुरूवासरे रात 9/57, विशाखा नक्षत्रे दिन 11/14, ब्रह्म योगे प्रात: 6/54, विष्टि करणे सू.उ. 5/36, सू.अ. 6/24, चन्द्रचार वृश्चिक, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक-0,3,7.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल अष्टमीं को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से मैथी धनियां, हल्दी, जीरा, आदि में तेजी होगी. सोना, चांदी, शेयर आदि में मोती, बिनौला, लोहा, में तेजी का रूख रहेगा. आज वायदा विचार में मंगल के बने भाव घटें, उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 1599 है.

SUDOKU 7486

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7485

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1